STEPPING STONE
SCHOOL (HIGH)

worksheet:12

class 9

Hindi literature

28.05.20

लाठी में हैं गुण बहुत, सदा रखिये संग।
गहरि नदी, नाली जहाँ, तहाँ बचावै अंग।।
तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहँ मारे।
दुश्मन दावागीर होय, तिनहूँ को झारे।।
कह गिरिधर कविराय, सुनो हे दूर के बाठी।
सब हथियार छाँडि, हाथ महँ लीजै लाठी।। 1

कमरी थोरे दाम की, बहुतै आवै काम।
खासा मलमल वाफ्ता, उनकर राखै मान॥
उनकर राखै मान, बँद जहँ आड़े आवै।
बकुचा बाँधे मोट, राति को झारि बिछावै॥
कह 'गिरिधर कविराय', मिलत है थोरे दमरी।
सब दिन राखै साथ, बड़ी मर्यादा कमरी॥ 2

Scanned by TapScanner

गुन के गाहक सहस, नर बिन गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय॥
शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ के एक रंग, काग सब भये अपावन॥
कह गिरिधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मन के।
बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के॥ 3

साँई सब संसार में, मतलब का व्यवहार।
जब लग पैसा गाँठ में, तब लग ताको यार॥
तब लग ताको यार, यार संग ही संग डोले।
पैसा रहे न पास, यार मुख से नहिं बोले॥
कह गिरिधर कविराय जगत यहि लेखा भाई।
करत बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साँई॥ 4

Scanned by TapScanner

worksheet:12
class 9
Hindi literature

28.05.20

WORK SHEET : 12 21.05.20

CLASS : 9

SUB : HINDI LITERATURE

pg.3

साहित्य सागर (पद्य)

गिरिधर की कुंडलियाँ

1. " लाठी में गुण .... लीजै लाठी ॥"

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'गिरिधर कविराय जी' द्वारा रचित 'गिरिधर की कुंडलियाँ' से ली गई हैं। प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने लाठी के गुणों के माध्यम से हमें प्रेरणा दी है।

कवि कहते हैं कि लाठी बहुत काम की वस्तु है। हमें इसे सदा साथ रखना चाहिए। यदि गहरी नदी या नाली आ जाए तो इसकी मदद से उसे पार कर सकते हैं। कोई कुत्ता हम पर झपटे तो उसे मार कर भगा सकते हैं। यदि कोई शत्रु हम पर हमला करे तो उसे भी मार सकते हैं। अत: कवि कहते हैं कि हे धूल में चलने वाले राही सभी हथियारों को छोड़ कर हाथ में लाठी अवश्य रखो।

2. " कमरी थोरे दाम की ...... मर्यादा कमरी ॥"

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों में गिरिधर कविराय ने साधारण से कंबल से मिलने वाले लाभों का वर्णन किया है।

कवि कहते हैं कि एक साधारण तथा बहुत ही कम दाम में मिलने वाली कंबली भी बहुत लाभदायक हो सकती है। खासा, मलमल, वाफ्ता आदि बहुमूल्य वस्त्रों के स्थान पर भी यह काम आती है। संकट के समय इससे हम अपने शरीर को भी ढक सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर यह बड़ी गठरी को भी बाँधने के काम आती है। रात के समय इसे झाड़ कर बिछा कर सोने का काम भी लिया जा सकता है। कम्बल का दाम अधिक नहीं होता है और इसे सभी खरीद सकते हैं, इसलिए इसे सदा साथ रखना चाहिए।

अत: कवि कहते हैं कि हमें कभी भी किसी वस्तु को छोटा नहीं समझना चाहिए। सबका अपना महत्त्व होता है।

12:35

Scanned by TapScanner

उ॰ "गुन के गाहक ..... गाहक गुन के ॥"

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से 'गिरिधर जी' कहते हैं कि व्यक्ति के आंतरिक गुण ही उसे संसार में मान - सम्मान दिलाते हैं, बिना गुण वाले को कोई नहीं पूछता। कवि कहते हैं कि गुणों वालों के हजारों ग्राहक अर्थात् कदरदान होते हैं। कवि ने अपनी बातों को कौए और कोयल के माध्यम से समझाया है। कौआ और कोयल दोनों का रंग एक-सा ही होता है परन्तु कोयल सबको अच्छी लगती है और कौए को सभी अपवित्र समझते हैं। अत: गिरिधर जी कहते हैं कि हे मेरे मन के ठाकुर सुनो बिना गुण वाले की कोई भी प्रशंसा नहीं करता इसलिए प्रत्येक व्यक्ति में अच्छे गुणों को अपनाना चाहिए।

4. "साँई सब संसार में ..... बिरला कोई साँई ॥"

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि यह संसार स्वार्थ से भरा हुआ है।

कवि कहते हैं कि इस संसार में अधिकतर व्यक्ति स्वार्थी हैं। जब तक हमारे पास पैसा रहता है या हमसे उनका कोई स्वार्थ सिद्ध होता है तब तक वे हमारे मित्र बने फिरते हैं और हमारे आगे - पीछे घूमते रहते हैं परन्तु वही व्यक्ति जब किसी लायक नहीं रह जाता तो मित्र बने हुए लोग ही उससे मुँह फेर लेते हैं। कवि कहते हैं कि संसार की यही रीति है। नि:स्वार्थ भाव से प्रेम करने वाले संसार में कोई विरले ही होते हैं।

Scanned by TapScanner